प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 5.11.67

रिकार्ड– धीरज धर मनवा.....ओमशांति। रुहानी बच्चों ने गीत सुना। सुख के दिन आवेंगे, दुःख के बादल हट जावेंगे। कैसे?सो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे अशरीरी बनते जाओ। बाप को याद करते रहो। शरी को भूलने में ही टाइम लगता है। मासी का घर नहीं है। शरीर को भूलते जाओ। अपन को आत्मा समझते जाओ। हम बाप के बच्चे अशरीरी हैं। यही बाप का डायरैक्शन है। बच्चे अशरीरी बनते जाओ तुम्हारे सब दुःख दूर हो जावेंगे। सतोप्रधान हो जावेंगे। कर्मातीत अवस्था हो जावेगी। यह मेहनत की बात है। जो समझाते हैं वह भी ऐसे अशरीरी बनने का पुरुषार्थ करते होंगे ना। उनको भी वाणी से परे घर जाना है। तो जरूर यह अभ्यास करता होगा। फिर कोई आकर कहेंगे बाबा गुडमार्निंग। तो इनको नीचे उतर गुडमार्निंग करना पड़ेगा। आवाज में आना पड़ेगा। यह तो पुरुषार्थ करते रहते हैं वाणी से परे होने का ;क्योंकि इससे ही पाप कट जावेंगे। पाप कटते2 आत्मा पावन बन जावेगी। इनको भी (अभ्यास) करना है ना। बाप श्रीमत देते हैं बच्चों। तो यह भी उसमें आ जाता है। इनको (बाबा) भी बाप कहते हैं। अशरीरी आये हो फिर अशरीरी हो जाना है। अशरीरी बनने से ही पाप कटेंगे। इसको ही याद की यात्रा अथवा योगअग्नि कहा जाता है। मुख्य है यह। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। सतोप्रधान बनने लिए पुरुषार्थ तो करना पड़े ना। जब सतोप्रधान बनेंगे तो अशरीरी बन जावेंगे। वाणी से परे रहने का पुरुषार्थ करते रहेंगे। इनको भी अभ्यास करना है। यह समझते हैं जैसे अशरीरी हो बाप को याद करुंगा। मुझे देख बच्चे भी ऐसे करने लग पड़ेंगे। बाप समझाते रहते हैं तुम्हारा कल्याण इस एक बात में ही होना है। सुबह को सवेरे 3/4 बजे उठो। उठकर स्नान आदि कर यही खयाल रखना चाहिए हम अशरीर हो बैठें और हम आत्मा अपने बाप को याद करते रहें। हम आत्मा अशरीरी हैं। बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। कर्मातीत अवस्था होगी। फिर दुःख के बादल हटते जावेंगे। बाप जो कहते हैं वह करना चाहिए ना। मैं आत्मा हूं। शिवबाबा का बच्चा हूं। वास्तव में मैं अशरीरी हूं। फिर यहां पार्ट बजाने लिए यह शरीर लिया है। चक्र पूरा किया। अब हमको वापस जाना है। अपन को अशरीरी समझते आवाज से परे जाना है। अगर किसको गुडमार्निंग करना पड़े तो गोया आवाज में उतरना पड़े। नहीं तो शांति में बैठना पड़े। बाबा अपन को आत्मा समझ बाप की याद में बैठे रहते हैं। हम भी अशरीरी हो बाप की याद में बैठ जावें। फिर क्लास में टाइम पर आना है। यहां भी देहाभिमान छोड़ अपन को आत्मा समझ बैठना है। बाबा समझाते बहुत अच्छा हैं। सिर्फ कहना नहीं है। कथनी को फिर करना भी है। बाप कहते हैं बच्चे फिर भूल जाते हैं। तूफान तो बहुत आवेंगे। मन को बाहर के तूफानों से हटाय अपन को आत्मा समझो। आत्मा समझने से बुद्धि भटकेगी नहीं। याद में ही मेहनत है। मेहनत करनी है। सिर्फ कहने की बात नहीं। कोई से दिल लगाई ,फीमेल को देख क्रिमिनल आई गई ,यह कोई अशरीरीपना नहीं। अशरीरीपना में कब कोई की याद नहीं रहेगी। देहाभिमान में आने से आंखें धोखा देती हैं। फिर याद आती रहेगी। मंज़िल बड़ी उंची है। यह बाबा समझाते भी हैं और अभ्यास भी करते रहते हैं। शिवबाबा को तो अभ्यास नहीं करना है। इस दादा को करना है। पहले2 तो अपन को आत्मा समझना है। बाबा ने कहा है तुम अशरीरी हो। शरीर का भान तोड़ना है। बाबा खुद करते हैं तो बच्चों को भी सिखलावेंगे ,ऐसे करो, ऐसे बैठो। थक जाओ तो फिर लेट जाओ। अशरीरी समझ बाप को याद करते रहो। पुरुषार्थ करो। तुम ऐसे पुरुषार्थ करते नहीं हो। सिर्फ कथनी है, करनी नहीं। बाबा समझते हैं कथनी में बहुत आते हैं। कथनी और करनी एक जैसे होनी चाहिए। अभ्यास पड़ जाने से तुम घड़ी2 अशरीरी हो जावेंगे। यह टेव पड़ने में टाइम लगता है। घड़ी2 समझो मैं आत्मा हूं। बाकी बाप की याद में ही विघ्न पड़ती है। घड़ी2 याद छूट जावेंगे।

आज बाबा खास इस .....दे रहे हैं। कर्मातीत अवस्था पिछाड़ी में ही होगी। जिसका बहुत पुरुषार्थ होगा वही कर्मातीत अवस्था को पाय सकेंगे। बहुत मेहनत करने से पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है। घड़ी2 यह अभ्यास करते रहो। कर्मातीत अवस्था होगी तब उंच पद पायेंगे। सिर्फ कहने से नहीं। इसें कोई आसन लगाने हठयोग आदि करने की भी दरकार नहीं। हम आत्मा अशरीरी हैं। पीछे इस शरीर में प्रवेश किया है। अब वापस जाना है। अभी हमको दूसरे शरीर (में) प्रवेश नहीं करना है। घर को ही याद करना पड़े। बाबा समझाते तो हैं ;परंतु यहां से बाहर निकलते ही फिर भूल जाते हैं। बाप जो कहते हैं वह करते नहीं हैं। देहाभिमान में आने से कर्मइन्द्रियां बहुत धोखा देती रहेंगी। सेकेंड में कुछ न कुछ विकर्म कर लेत हैं। जैसे सेकेंड में जीवनमुक्ति वैसे माया सेकेंड में गटर में डाल देगी। इसलिए बाबा कहते हैं बहुत उंच मंजिल है। अपन को बाहर से खयालात से हटाय बाप को याद करना है। फिर गुडमार्निंग करने की आवाज नहीं निकलगा। लाचारी आवाज में आय फिर चढ़ जावेंगे। रेसपांड करने नीचे आना पड़ता है। ऐसे अगर बच्चे अभ्यास करेंगे तो कुछ कल्याण होता जावेगा। कर्मइन्द्रियां वश होती जावेंगी। इसको ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। बाकी शरीर निर्वाह लिए कर्म तो करना पड़ता है। अगर बच्चों को पैसा बहुत है ,कमाई करने की दरकार नहीं तो और ही सौभाग्यशाली पदमभाग्शाली कहेंगे। एक जन्म लिए धन काफी है। अब तो हम कर्मातीत अवस्था में बैठ जावें। इस अवस्था में बैठे2 शरीर छूट जावे फिर अंत मते .....गते हो...जावेंगे। बाप को याद करते2 घर चले जावेंगे। अब तो घर जाना है ना। शरीर नहीं लेना है। ऐसे2 अभ्यास करते रहेंगे तो फायदा बहुत होगा और दु:ख दूर हो जावेंगे। बाप आये ही हैं धीरज देने। तुमको अशरीरीपना सिखलाने। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से कर्मइन्द्रियों पर विजय पावेंगे। और कोई उपाय नहीं। बाकी सिर्फ कथनी होगी, करेंगे कुछ नहीं तो इतना प्योर नहीं होंगे। माला का दाना भी नहीं बन सकेंगे। पुरुषार्थ कर विजयमाला में पिरोना है। बच्चों को दिल से लगता है बाबा तो ठीक कहते हैं और वह करना चाहिए। बाकी कोई से आंख लगाना, बायस्कोप देखना यह सब व्यर्थ टाइम गंवाना है। बाप कहते हैं अशरीरी बन मुझे याद करो। अगर बाप का फरमान नहीं मानते तो गोया नास्तिक ठहरे। बाप रोज बच्चों को सम्भालते तो रहते हैं। आज थोड़ा जोर से समझाते हैं। पुरुषार्थ बहुत करना है। उंच मंज़िल समझ डरना न है। पार निर्वाण जाना भी जरूर है। इस समय सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। कर्मातीत अवस्था में जाना जरूर है। नहीं तो पद बहुत कम हो जावेगा। बहुत बच्चे हैं जो जरा भी याद नहीं करते। यथार्थ रीति अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। शरीर का भान मिटता जाये। इसमें ही मेहनत है। इतना सहज थोड़े ही डबल सिरताज बनेंगे। नर से नारायण बनने लिए कर्मातीत अवस्था चाहिए। और कुछ भी याद न पड़े। सर्प का ,भ्रमरी का दृष्टांत अभी का है। बाप ने समझाया है वह सन्यासी आदि फिर कॉपी करते हैं। वह कोई ब्राह्मण तो नहीं। ब्राह्मण–ब्राह्मणियां तुम हो। तुम्हारे लिए दृष्टांत है। सन्यासियों को वास्तव में कापी नहीं करना चाहिए। कॉपी करने वालों को सजा मिलती है। कछुए का मिसाल भी वही नहीं दे सकते। तुमको शरीर निर्वाह अर्थ कर्म कर फिर याद की यात्रा में अन्तर्मुख हो बैठना है। यह पुरानी खल तो छोड़नी है। अब अशरीरी बनना है। हम आत्मा अशरीरी थीं। फिर हमने ही 84जन्म लिए हैं। चक्र की भी याद आ जाती है। बाप को भी याद करते हैं। यह है ज्ञान और योग। याद का चार्ट बढ़ाना चाहिए। डायरी रखनी है कितना समय हम याद में बैठे। कम चार्ट देख लज्जा आवेगी। भक्ति भी हमेशा सवेरे करते हैं। कहते हैं ना राम सिमर प्रभात मोरे मन। आत्मा को कहते हैं अब राम को सुमिरना है अर्थात् याद करना है। इससे ही विकर्म विनाश होंगे। अब बच्चे आते हैं बाबा पास गुडमार्निंग करने। ना तो नहीं करेंगे। अच्छा भल आवे ;परंतु समझते हैं बाबा याद में बैठे हैं। उनको नीचे वाणी में आना पड़ेगा। फिर आत्मा समझ बैठ जाना पड़ेगा। गुडमार्निंग

करके जावें। वास्तव (में) गुडमार्निंग भी क्या करना है?क्यों नहीं आत्मा समझ बैठ जावें। बच्चे भी याद में बैठ जावेंगे तो और ही मदद होगी। फिर क्लास में भी आना है। बाप भी बच्चों को श्रीमत देते हैं श्रेष्ठ बनने लिए। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। सतोप्रधान प्योर आत्मा को, तमोप्रधान पतित आत्मा को कहा जाता है। यहां मनुष्य को धन आदि बहुत है। तो अपन को स्वर्ग में समझते हैं ;परंतु हैं नर्कवासी। यहां कोई अपने को स्वर्गवासी कह न सके। कलियुग में फिर स्वर्ग कहां से आया?मनुष्य समझते हैं कलियुग में अजुन 40हजार वर्ष पड़े हैं। बिल्कुल ही अज्ञान अंधियारे, कुम्भकर्ण के नींद में सोये पड़े हैं। जब भम्भोर को आग लगेगी तब जागेंगे ;परंतु टू लेट। यह भी होना है। देरी से जागेंगे और विनाश को पाय लेंगे। यह तुमको ज्ञान रत्न मिलते हैं ,जिससे तुम्हारा 21जन्मों लिए भण्डारा भर जाता है। उनको अल्लाउद्दीन का ,कारून का खजाना कहा जाता। तुम जानते हो अभी हम स्वर्ग की बादशाही ले रहे हैं ;पंरतु सिर्फ कहने से तो नहीं मिल जावेगी। मेहनत करनी पड़े। यहां एकांत का बहुत अच्छा स्थान है। ऐसे अभ्यास कब बाहर में कर नहीं सकेंगे। 7दिन का अभ्यास यहां तुम बहुत कर सकते हो। यहां तुम टाइम वेस्ट मत करो। टाइम को सम्भाल करना सीखो। बाकी क्रिमिनल आई रखना, बाइस्कोप आदि देखना यह तो नीचे गिरने की निशानी है। चढ़ती कला तो हो न सके। तुम मेहनत कहां करते हो। अपन को आत्मा समझ बैठो। आत्मा है ही बाप का बच्चा। मुख्य बात अपन को आत्मा समझ अशरीरी हो बैठ जाओ। मैं देह नहीं आत्मा हूं। पहले आत्मा को पक्का निश्चय करो। नहीं तो आंखें धोखा देती रहेंगी। अन्तर्मुखता को पाय नहीं सकेंगे। कहां भी रहो यह अभ्यास कर सकते हो। ऐसे नहीं यहां रहने से अभ्यास होगा। यहां सात रोज में यही सीखना है। बाप अभी भी सिखाय रहे हैं। यूं तो रोज समझाते रहते हैं। फिर आज जोर से समझाते हैं। बच्चे, अपन पर रहम करो। तुम पवित्र थे तो शक्ति भी थी। सुख भी था। तुम ऐसे (ल.ना.) थे। फिर बनना है। बाबा युक्तियां बतलाते हैं। वह करना पड़े। तुम अजामिल जैसे पापात्मा हो। सब अजामिल हैं। 84जन्म लिए हैं तो अजामिल ठहरे ना। यह बहुतों जन्मों के भी अंत का जन्म है। भक्ति भी पूरी की है। पाप भी पूरे किये हैं। ऐसे नहीं भक्ति करने से पाप कटते हैं। कुछ भी नहीं। यह अभ्यास तो बाप के सिवाय कोई नहीं सिखलाते। भक्ति करते उतरते ही आये हैं। एकदम आय पेट पड़े हैं। जिसने भक्ति की वह ही अजामिल ठहरी। अजामिल कोई दूसरा नहीं होता। तुम सबसे जास्ती अजामिल हो। बंदर भी सबसे बड़े तुम हो। सेना भी तुम्हारी ली है। तो बाप समझाते बच्च गफलत मत करो। मुफ्त अपना समय बरबाद करेंगे। बाबा वारनिंग देते हैं। क्रिमिनल आई न रखनी है। आंखें बहुत धोखेबाज हैं। तब तो सूरदास का मिसाल देते हैं। ऐसे कोई ने किया नहीं है। यह एक कथा बना दी है। नाम जाते–आते। बाकी ऐसे कौन बैठ अपनी आंखें निकालेंगे। यह सब गपोड़े हैं भक्तिमार्ग के। रामायण, भगवद आदि यह भी जो भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं सब गिरने के हैं। एक गीता ही है जिससे तुम उपर चढ़ते हो;परंतु इसको भी खण्डन कर दिया है। कहां शिवबाबा जो पतित–पावन है कहां श्रीकृष्ण जो पूरे 84जन्म लेने वाला मनुष्य है। कितनी बड़ी भूल है। 84जन्मों वाला ही पतित–अजामिल कहेंगे। बाबा बच्चों को समझाते रहते हैं अशरीरी बनो। यहां तो सब नहीं आय बैठेंगे। फिर तो बहुत मकान बनाना पड़े। तुम बच्चे आकर रहते इसलिए यह हाल आदि बनाने पड़ते हैं। बुद्धि में चलता है यह बनाना है। फिर भी याद के यात्रा में जरूर रहना है। रात का अभ्यास बढ़ाओ। अमृतवेला 2बजे को कहा जाता है। भक्त लोग रात को 2बजे उठते हैं। अब तो बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश हो जाये। अपन को आत्मा समझो। इतना उंच पद पाने लिए मेहनत करो। पहले2 यह अभ्यास करो हम आत्मा अशरीरी हैं। अपन को आत्मा निश्चय करेंगे तो बाप आपे ही याद आवेगा। याद की यात्रासे ही बेड़ा पार होना है। तुम उस तरफ चले जायेंगे। पहले निर्वाणधाम में जाय कर राज्य करेंगे। पहले राजाई का मालिक बनने अशरीरी होने का अभ्यास करो। बाबा आज बच्चों को..... सावधानी देते हैं। बच्चे मेहनत करते नहीं हैं। इसलिए तरस पड़ता है। उंच पद कैसे पाय सकेंगे?अच्छा ,ओम।